

Weber's Theory of Industrial Location

जो स्थान कृषि के स्थानीयकरण में वॉन थुनेन के सिद्धांत का है तथा शहरों एवं केन्द्र स्थलों के स्थानीयकरण में क्रिस्टॉलर का है वही स्थान औद्योगिकीकरण में वेबर का है।

1909 ई. में उन्होंने अपने क्रांतिकारी वैज्ञानिक एवं विश्व प्रसिद्ध सिद्धांत का प्रतिपादन किया। जर्मन भाषा में रचित ग्रंथ — *Über den Standort der Industrien* यानी *Theory of Location of Industries* प्रकाशित किया। वेबर 1904 से 1907 तक प्रौढ विश्वविद्यालय तथा 1907 से 1935 तक जर्मन के हार्ड डैल्फो विश्वविद्यालय में आर्थशास्त्र के प्रोफेसर थे।

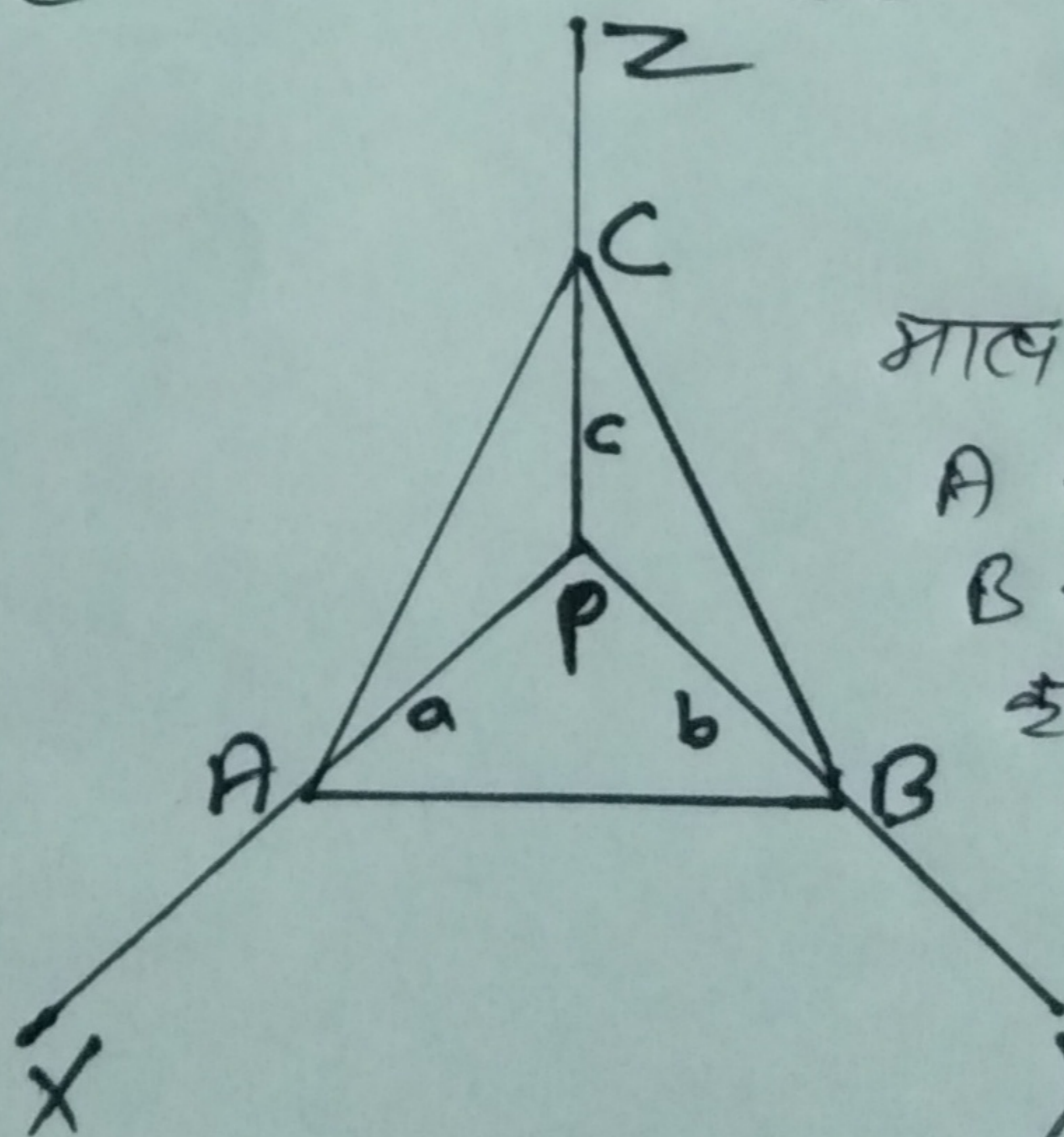
वेबर के सिद्धांत की मान्यताएँ

- ① कच्ची सामग्री कुछ निश्चित क्षेत्रों में प्राप्त होती है।
- ② प्रत्येक उद्योगका एक आसीमित बाजार होता है तथा हर उद्योग की पूर्व स्पष्टी मिली होती है। इसे एकाधिकार की बुद्धि प्राप्त नहीं होती है।
- ③ श्रम की उपलब्धता निश्चित क्षेत्रों में सीमित होती है। तथा श्रम विभिन्न मजदूरी पर आसीमित मात्रा में उपलब्ध है।
- ④ परिवहन आड़ा, दूरी एवं भार में वृद्धि के साथ बढ़ता है।

① जिन क्षेत्र में उद्योग की स्थापना करनी है वहाँ व्यवस्थापक, जलवायु, तकनीकी दक्षता सभी समझ की तथा वह क्षेत्र एक राजनीतिक दल के प्रशासन में हो।

उद्योगों के स्थानीयकरण में परिवहन लागत का प्रभाव :-

वेबर ने उद्योग के स्थानीयकरण के लिए परिवहन लागत को प्रमुख निर्णायक - कारक माना है। उद्योग की स्थापना के लिए वह एक स्थान को ढूँढता है। जहाँ कच्ची सामग्री व तैयार माल पर न्यूनतम लागत आती है। इसके लिए वह स्थानीयकरण त्रिकूज (Location Triangle) का प्रयोग करता है। जिसमें C उत्पादित वस्तु का बिन्दु है। तथा A, और B क्रमशः कच्चे माल की उपलब्धता के बिन्दु हैं। ये दोनों कच्चे माल अशुद्ध हैं (जिनका वजन उत्पादन प्रक्रिया में घटता है)। इस दृष्टिकोण से उद्योग की स्थापना इस स्थान पर होगी जहाँ कुल दूरी माल पर परिवहन व्यय सबसे कम हो।



चित्र में एक इकट्ठी तैयार माल बनाने के लिए X इन A कच्चा माल तथा Y इन B कच्चा माल की आवश्यकता होती है। तथा Z इन तैयार माल बाजार C तक परिवहन करना होता है। यदि P उद्योग की स्थापना केन्द्र है।

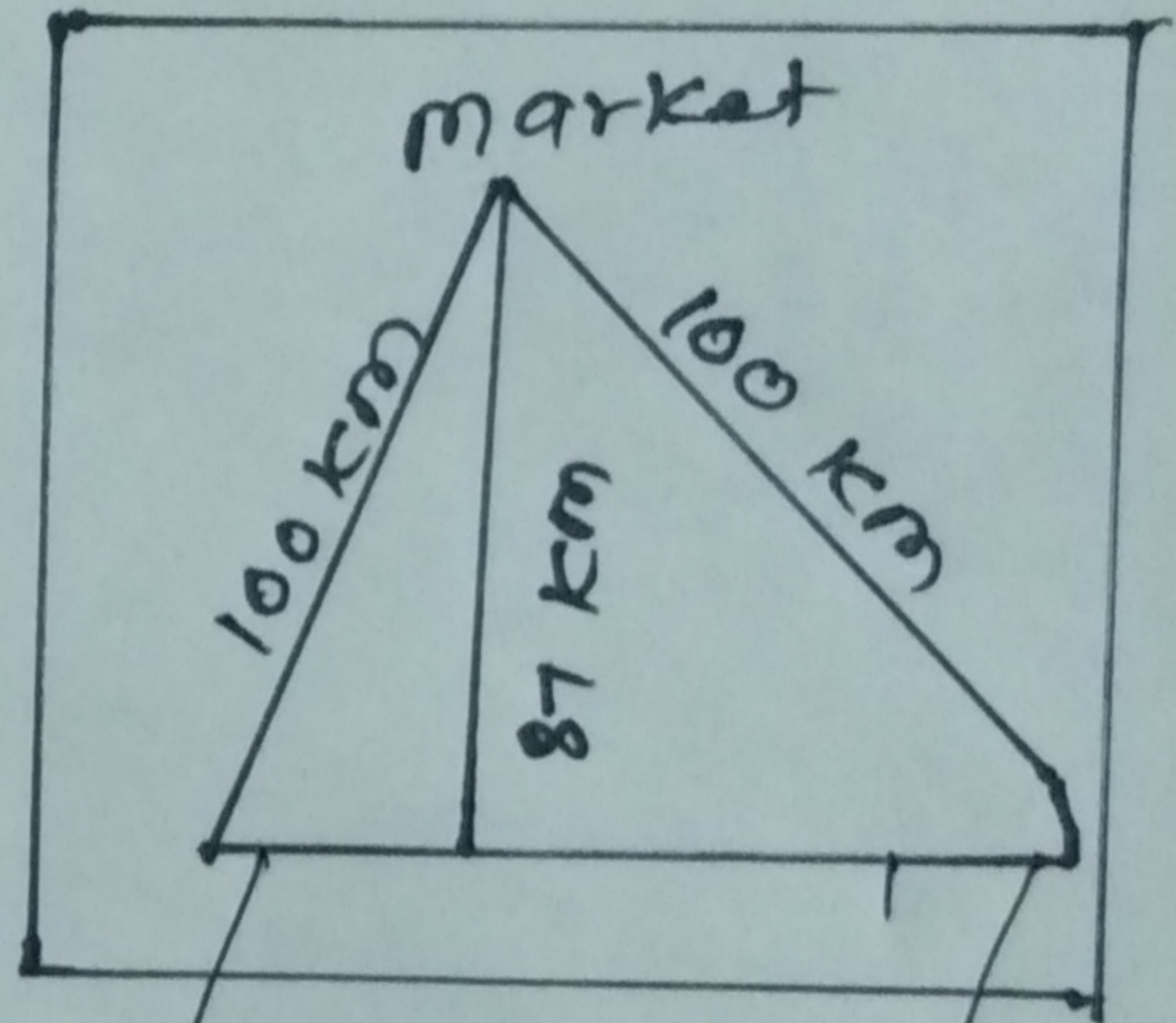
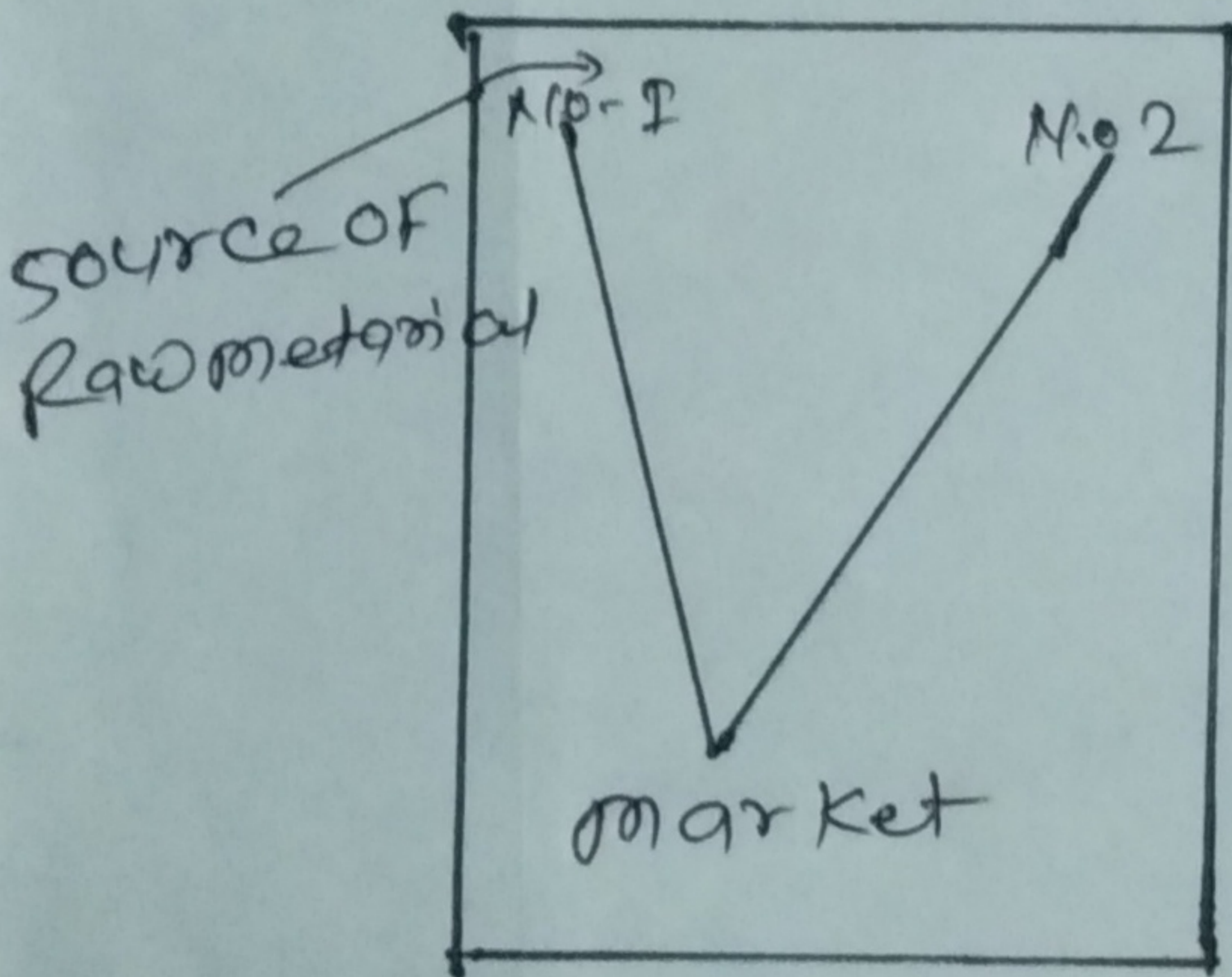
तथा a, b, c , दरियाँ क्रमशः PA, PB तथा PC के लिए हैं। तब हमें P की ऐसी स्थिति ज्ञात करनी है जिनसे $Xa + 2c$ न्यूनतम हो। यह वह बिन्दु होगा जहाँ कुल परिवहन लागत न्यूनतम होगी। यदि कच्चे माल की संख्या दो से अधिक है। या तैयार माल का बाजार एक स्थान से अधिक है। तो इद्योग की स्थापना इसी विधि द्वारा चतुर्भुज या पंचभुज के अंदर स्थानीयकरण भार के आधार पर होगी।

इसके अतिरिक्त वेब्ट ने कुछ अन्य स्थितियों में भी इद्योग की स्थापना के लिए विचार किया है:-

- ① यदि इद्योग के लिए एक ही कच्चा माल उपलब्ध है तथा बाजार भी एक ही है तो इस इद्योग की स्थापना की निम्न चार सम्भावनाएँ हो सकती हैं:-
- ① यदि कच्चा माल सर्वत्र मिलता है तो इद्योग बाजार में स्थापित किया जा सकता है। क्योंकि इस बिन्दु पर परिवहन व्यय नहीं होगा।
- ② यदि कच्चा माल शुरु है तथा एक ही स्थान पर मिलता है तो इद्योग कच्चे माल के स्रोत या बाजार बिन्दु पर स्थापित हो सकता है।
- ③ यदि इद्योग में सर्वत्र कुल मिलाकर तथा शुरु पर्याप्त दोनों का उपयोग कच्चे माल के रूप में हो तो इद्योग बाजार बिन्दु पर स्थापित होगा, जिसे उत्पादनकर्ता को अतिरिक्त व्यय नहीं देना पड़ेगा।

(v) यदि इस्पात कुच पदार्थ का कुच माल इस्पात में जाता है तो इस्पात की स्थापना कुच माल के निकट होगी, क्योंकि इस्पात प्रक्रिया में मिश्रित कुच माल का अनावश्यक भार कम हो जाता है।

* यदि इस्पात के लिए दो या दो से अधिक कुच माल के स्रोत तथा बाजार बिन्दु हैं तो इस्पात के स्थापना की निम्नलिखित संभावनाएँ होती हैं:



वेधर के विद्युत के अनुसार निर्माण - इस्पात की फैक्टरी की अवस्थिति ।

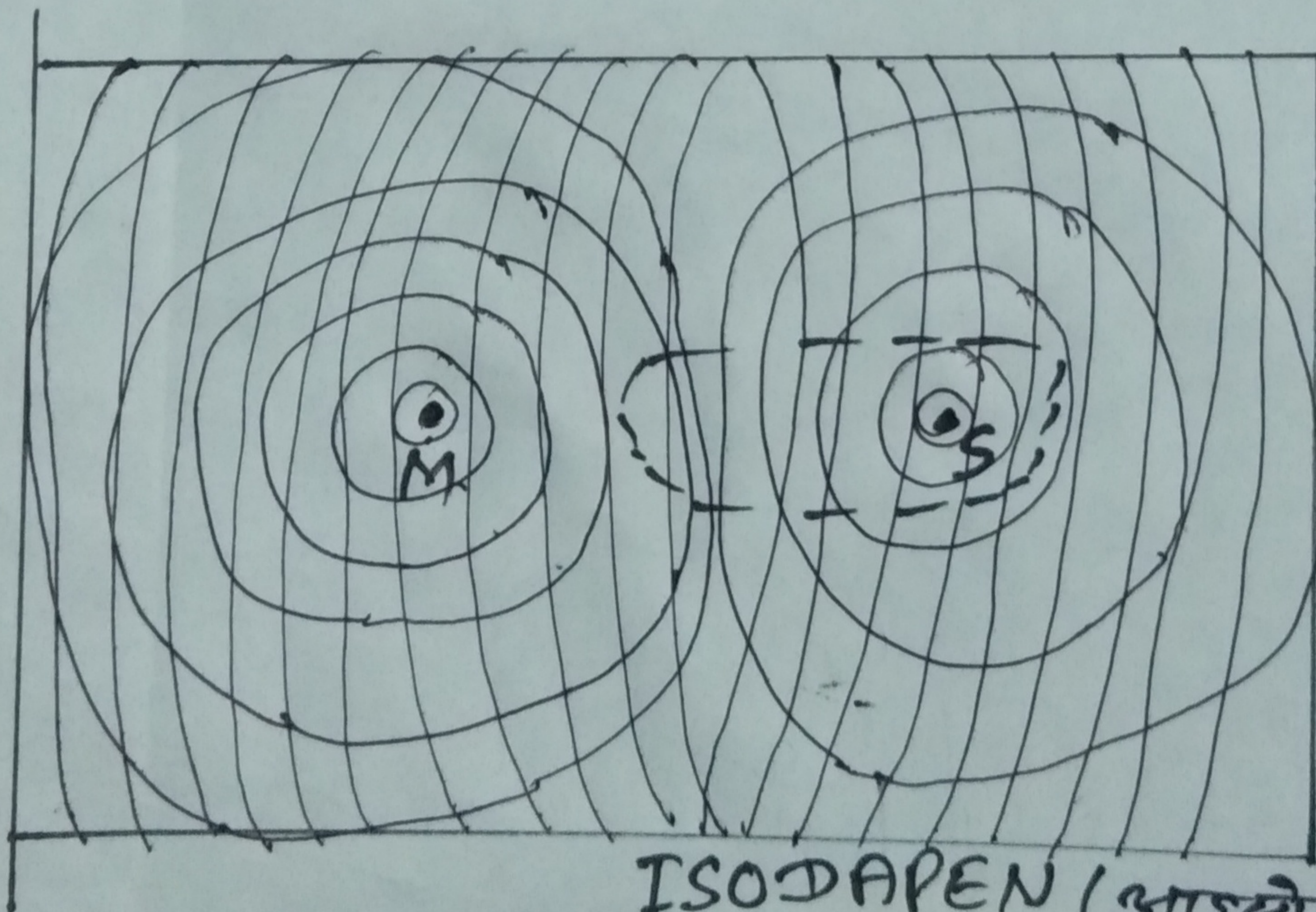
- ① यदि दोनों कुच माल सर्वत्र कुलम हैं तो इस्पात बाजार बिन्दु पर स्थापित होगा क्योंकि वहाँ परिकल्पना कम नहीं होगा ।
- ② यदि दोनों कुच माल सुदूर हैं किन्तु सर्वत्र कुलम नहीं हैं तो भी इस्पात बाजार बिन्दु पर स्थापित

होगा (क्योंकि यहाँ न्यूनतम परिवहन व्यय होगा)

(ii) यदि दोनों माप मिश्रित पदार्थ हैं तथा निश्चित स्थान पर हैं तो इस्कोग की स्थापना — स्थानीयकरण विभुज द्वारा निश्चित की जाती है।

* इस्कोग के स्थानीयकरण में श्रम का प्रभाव

वेबर ने इस्कोग की स्थापना में श्रम लागत को महत्वपूर्ण माना है इसकी मान्यता है कि इस्कोग की स्थापना न्यूनतम परिवहन लागत वाले बिन्दु से हटकर भी सम्भव है क्योंकि सस्ते श्रम द्वारा — परिवहन मूल्य वृद्धि की क्षति पूर्ति की जा सके। इस विचार को वेबर ने आइसोडेपेन की सहायता से प्रस्तुत किया है।



आइसोडेपेन एक रेखा होती है जो समान कुल लागतों के बिन्दुओं के बिन्दुपथ को जोड़ती है।

ISODAPEN (आइसोडेपेन)

M = बाजार

S = कच्चे माप का स्रोत

आलोचना :-

वेब की विद्यार्थ की आलोचना

- 1 वेब का सम्पूर्ण विश्लेषण कच्ची सामग्री को तब तक केन्द्र को निश्चित बिन्दु मानकर हुआ है जबकि कृषिगत एवं वन्य उत्पादन संबंधी कच्ची सामग्री तथा कच्ची उत्पादित पदार्थों की मात्रा का क्षेत्रीय विस्तार होता है।
- 2 वेब के चिह्न परिवर्तन लागत पर ध्यान दिया, उत्पादन प्रक्रिया पर नहीं जबकि वास्तव में अधिकतम उत्पादन स्तर के आधार पर अधिकतम क्षति निर्धार करनी है।
- 3 वेब का विश्लेषण पूर्ण प्रतिस्पर्धी की मान्यता के अंतर्गत हुआ है, अतएव वे न्यूनतम लागत बिन्दु को ही अधिकतम लाभ बिन्दु समझते हैं जबकि वास्तविक जगत में यह चरितार्थ नहीं होता।

* उपरोक्त आलोचनाओं के बावजूद वेब की विद्यार्थ क्षेत्र के स्थानीयकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था। इस विद्यार्थ की मान्यताओं में वास्तविकता का अधिकतम संभव प्रयास हुआ।